

4686

112

112

वानक

॥ ११ ॥

श्रीगणेशाय नमः प्रणम्य विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं
प्रभुं नानाशास्त्रोक्तं पद्मे रजनीति सुत्रयम् १ अस्या र्थ
त्रैलोक्याकाशाधिपतिपरमेश्वरविष्णुकननमस्कारगारिना
नाशास्त्रदेवि किं किं कनराजनीति आदि आकलापुत्रलाइ
सिकाउत्तानिमित्त वानकादिविलोकहृदाभया १ अकिंवि
मीदसास्त्रनरो ज्ञास्यति न त्वत् ॥ धर्मपदसविनयं काय्या
काय्यभुभासुभम् २ अस्या र्थगोशास्त्रज्ञानानुवेजोद

॥ ११ ॥

नृयो धर्महो योत्र धर्महो योवहियाकामहो योद्यति या
कामहो योगनृयो नृभिर्निजानला उपदेसादिना को समर्थ
होला २ तदहं प्रवक्ष्यामि नराणां हितकाम्यया येन प्रज्ञा
प्रवृत्ते मां नैव हितकारिणि ३ अस्या र्थमनुष्ठाका उपका
रनिमित्त वानकादिविलोकहृदाभया जलमनुष्ठा ले यो सास्त्र
बुद्धिमानसलाइ यो सास्त्रज्ञे आमा ले पासा नै जो रू ३ भलह
वं प्रभुभ्यामी वानकेन नृ भाविन येरा विज्ञानमात्रेन सर्वज्ञे

मानक

॥३॥

मानासिद्ध ७ वैरिणां सह विश्वा संयोन कर्तुमि
हति सवृक्षाग्रेषु संस्रप पठित प्रतिबुद्धेते ८ अस्मा
र्थ मनुस्य विष्वा ल गन्य पिनुषा नासिद्ध कसोभ
न्याहृषका हागामा सुत न्याजस्तो होषस्या पदि वेधा
उद ८ धन धान्य प्रयोगेषु विद्या संग्रहो शुच आदा
रे व्यवहारे युन्य कलजा सदा भवेत् ९ अस्मार्थ धन
कमा उदासा विद्या संग्रहार्दमा वा दामा वेवहा गार्दमा

यम

॥३॥

पातिथो कगादा पा लाज नामानु ८ नगुरु सद्धि
माता नगुरु सद्विपिता यसां यति पुह घो संसा
रोद विद्वत् १० अस्मार्थ गुरुजातिका अस्मा पाति
होइन गुरुजातिका वावा पाति होइन कसे धन्यो आमा
वावलत जन्मा मा तदिद नृश हरेन समुहणी संसारना
इनत सर्थ गुरुहो १० पाता गगा समानिथ
पीता गुरुहो वच गुरुकेदा ससतर्थ पाता गगा पु

बानक
॥ ४ ॥

ननु न ११ अथ आमागंगा वसे वा हुन वा
वा पुरकार तिथि वसे वर हुन शुरु के दार सम रती
थ वरा वा हुन महता रिला इ भन्या गंगा तुल्य मान
११ वी आरुपं कुरुपाना क्षमा रूप तपस्विना को
किलाना स्वरूपाना नारि रूप पतिव्रता १२ अस्या
कुरुपि को रूप विद्या हो तपस्वि को रूप क्षमा हो को
किल को रूप मोर हो अखि को रूप पतिव्रता हो १२

राम
॥ ४ ॥

नच विद्या सपो वधु नच व्याधिरु मोरिह नच पत्यरु
पसे हान नच देवा त्पर वरु १३ अथार्थ वीद्या
जति को साधु सक बर को भाइ पनि हो इन रोग ज
ती को सउ अके छैन छोरा जति को पीयासि अर्को
छैन दैव जति को बलि यो को हो छैन १४ विद्या
प्रवासि नो मित्र आया मित्र गृह वृत्त अतुलस
व धमि व धर्म मित्र परव नच १४ अथार्थ प

चानक
॥ ५ ॥

रदेसकापीव विद्या हो धा को मित्र सुपात्र छि हो रो
गि को मित्र आषा वि हो परत्र को मित्र धर्म हो ९४
दुरा विना वृष विद्या अजि ए भी जन वृष विष गो
छि दारि दुस्त्र द्वा सान हनी वृष ९५ अस्मार्थ अ
भ्यास द्वाया पाहि पद्मा को विद्या पनि विष दुह
पेट मान पचा पदि बायो को अन्न पनि विष दुह के
गाल भगा जाहि दाज्म भाइ पनि विष दुह ९६ ठाक

रम

॥ ५ ॥

नतर निस्वास्ति पनि विष दुह ९५ अन्ना भ्यासे
हता विद्या नीत्य हासे हता स्त्रिया कवि यनि हत क्षत्र
त्यदोषो हतो नृप ९६ अस्मार्थ अभ्यास द्वाया पाहि
विद्या पनि नासिदु अका सिन हास लाग्ना पाहि मि
नासिदु धाट्या विजयना पाहि येन नासिदु धाटि
यामनि पन्पा राजा नासिदु ९६ यस्य पुत्रो न
विद्यासे नरु रो नच पडित अथ कार कलानस्य नरु

चानक
॥६॥

चन्द्रवसवी १) अस्माथ जस्को दोरा पडिनेप
निद्वेन सुरोपनि देन वृष्टि वंत पानि देन नाना नस्को
कुल चमा वासाका रान जलो होय ध्याए १) सब
एदिपको चड प्रभातर विदीपकः त्रैलोक्य डिपको
धर्म सुप्रकल दिपक १८ अस्माथ सखी को
दिप चहु माहुन दीप्ति को दीप जो सुजे हुन ती
नीलाक को दिप धर्म हो कुल को दिप सुप्रवहो १८

राम
॥६॥

अशोना चोपनेता च यस्तु विद्या प्रयदति अनदाता भय
दाना पंचैते पिता एव ता १८ अस्माथ जन्म दिन्यास
सुराशर अनादिन्या भय हुदा मा रक्षागन्मा एति पावज
नाकनुवा बाभेन १८ शरु पात्रि राजपति मित्र प
मित धैवव पतिमा तास्य माता च पंचैते माता एव
ता २० अस्माथ शरु सारा निमिति निशासु आफुक
नजन्म दिन्या एति पावज नाकन आया भन २०

धानक

॥ ५॥

लाडयेत्यं च वशाणि दस वर्षा निनाडयेत् सप्राप्तेषो
उसेवर्षे पुत्रमीदृशमायेत् २१ अस्यार्थे दद्यात्
लाडपाचवर्षसमतादना एष नु दस वर्षसमतादना
गनु सोह वर्षसमतादना एष नु पद्मा नु सिका नु तादनाग
नु सोह वर्षदिशि मित्रवर्षा वा २१ लादना दहवो
दोषा तादना दहवो गरा नस्या पुत्रवर्षा विषयता
दयेन नु ला दयेत् २२ अस्यार्थे दद्यात् लादना

राम

॥ ७ ॥

इनाग न्यावडो दोषद तादना नग न्याको वडो गरा पद
तस्य दोषला इति विषयला इताडने गर्नु २२ हरिनाथा
संयोस्यातां प्रज्ञाया कि प्रयोजन तावु भौ यदि नस्यातां
प्रज्ञाया कि प्रयोजन २३ अस्यार्थे जस मनुष्या
लाड रुचि पानिद्वेन अस्या सपनिद्वेन तावु विमो कया
प्रयोजनदः जस्का रुचि पानिद्वेन अस्या सपनिद्वेन तावु
विमो कया प्रयोजनद २३ पुत्रास्तु विविधैः सा

बानक

॥ ८ ॥

स्वै नियो ज्वा सनत व धे वि निज्ञा बुद्धि संपन्न भवती खलु
पुजिता २४ अर्थ ज्ञानी पण्डित लेखकाला इ
साहस्य माच्युष्या सिगर्भजा पुत्र शास्त्र ज्ञान्या पद्धि सवे
लोक ले पुजा गच्छन् २४ पठ पुत्र की माल स्यामप
ठे भावाहक पठन पुजितो राजा पठ पुत्र दिने दिने
२५ अर्थ हे पुत्र तुलसि नगरिकन सदा पठ प
द्या पाहि राजाले पनि पुजा गच्छन् तस्य धर्म दिन दिन

राम

॥ ८ ॥

पहूयानि बानकरि बिले भव्या २५ गुणै शक्ति पता पन्न
कि माते पि प्रयोजन विक्रय तेन सताधि गाव सिद्धि व
जितः २६ अर्थ - गंगार गरिकन काहुं दुःख श
ले गंगारिकन बुद्धि गाहुं कागला मायं दुःख शिव याप
निठे मोल मिह न तस्ये जात २६ नर स्या भर नह
परुप स्या भार न गरा गुरा स्य भार न शान न स्या य
रक्षमा २७ अर्थ मनुष्य को गहना रूप हो

यानक

॥ ६॥

पको गहना गरा हो गरा को गहना जान हो जान को ग
हना हो मा हो २७ गरा पृष्ठ शिमा रूप सिल प
हति पा कुल सिद्धि प हति मा विद्या भोग प हति
मा धन २८ अर्थ ह मनुष्य हो रूप को इक्षान
ग गरा सि क न कुल न हो सिल वत हो विद्या मा धन हो
र सिद्धि धन धन मा धन न क मा धन मा धन २९
ग गरा स्प हत रूप सिल स्प हत कुल अति दिव्य

राम

॥ ६॥

हता विद्या अ भोग रूप धन २९ अर्थ गरा
न भया को रूप य प हो धन दिन न न कया का धन प
निष्पद्य हो २९ गरा भुवा पते रूप सिल भुवा यते
कुल सी दि भुवा यते विद्या भोग भुवा यते धन ३०
अर्थ रूप को सो गरा ले ह ह कुल को सो भो
सिल ले ह ह विद्या को सो भो सिद्धि ले ह ह धन को
सो भो धन भोग ले ह ह ३० भुवा यते जय न न्या ३१

धानक

॥ १० ॥

शविद्याशुभोजयन यस्य योजयेत्तद्विचित्रधर्मसु
गोजयेत् ११ अथार्थ वेसकुल कीर्त्या कीर्त्ताह
गनुं कोरा लाइ विद्यामालाउनु वषनमा सनु ला इलाउ
उपिलाइ धर्ममालाउनु १२ नायु यतिजगत्
नमो नमो एसातेन वावसा यजहा येना नमो पाराप
होदध १३ अथार्थ अथार्थगयालाइ सुमेसर्व
तपानिउचो देन वातालापनि गीहो देन समुद्रपनि अत

राम

॥ १० ॥

रहेन १४ शोकनचन दधनिपारे नैका शेरनवा अ
दया दिवात कया दाना धरपनकमहु १५ अथार्थ
थ १ येक शोक मयापनि युवा शोक मयापनि येक
पारमयापनि येक अदोर मयापनि विद्या को उच मया
देरहुन व विद्यापारहु १६ योजनाना सहप्राणि
जया निमिपलिका मुग द न ले पा दो पदमे कनग
बानि १७ अथार्थ अथार्थगयाला विमोलापनि

पानक

॥ ११ ॥

हजार जो गन जाह सुभ्यासन गगना ना गरुडानि ये कपा
उचलेन ३४ सने एथा सने वीद्या सने पवन मासहा
सने धर्म काम सुभापाय धर्म सने ३५ सुभा
र्थ धन कामा उदामा विद्या पाठ दा पापवन वं दाम ध
यगदामा विद्या एति न सि ३६ ३५ गुरु सु सु
पाविद्या ७ कुरु न धन पतं सुभापा वीद्या पाविद्या च
तु ये नो पल अने ३६ अस्मा र्थ चापु काल

राम

॥ ११ ॥

विद्या पाई छ कजा क्या धन्या गुरु को सवाल बो लना का
लि पा लु ले न थवा धन दि का ए न थवा विद्या ले विद्या का
ठिकन मा न पाई छ ३६ यका का प्रदा ना पो गुरु
ना भिम न्य ते खान पो नि सन गला वा डल बाप जाय ते
३७ अस्मा र्थ यक सुभा ५६ उभा गुरु लाइ जो माने न
ने स का स पयो निकु कु र्म कन फे रि विद्या स का कोष
मा ज गुरु ह मस्कार न गुरु पातु ३७ प्रसक प्रत्य यो धि

चानक

॥१२॥

तत्तापितगृह शनिचो नसो धनेरमा मलो जाइग
धरवाहिय ३८ अस्पाथरुह उ पाठन हो वि
आफले पुस्तक मा पाच पठ छ त्यामा निस सभा
मा सो भाइ जा को राज मया को स्वा मि रै स्वा
भाइ देन ३८ सीलिये सेल मनाल स्व पचे ने मि क
सग्रह ३८ अस्पाथ तिपालु हु मि क नु खल ति
तहु पा डत हु मि चरु ल्या उ नु पात पा च थो

राम

॥१२॥

कविद्या चो ले पानि चो न सके नम सु य धन हो ३८
नह जे म नि जे ह त्व जे ह त्व गुण मु च ते गुण
गुण स्याति पयो दधि धृत घृत ४० अस्पाथ
जम काज्य ठाला इ जे ठाल भनु कल भव्या गुण को जे
ठाला इ जे ठाल भनु गुण लुभ्या इ द हि मा धि
जसो हो जह ४० कि कले नवी सा ले न गुण वा
न पूजा मो ना धनु र्व रवी सु द्रो पी पी र्जि किं को

॥

गुणः

पानक
॥१२॥

प्राप्ति ४१ अथार्थ इलोकल भगाले क्याहिद
जलकागुशादन उसेलाइ पुजागदन धनु एवं
संगमा काकुल माजन म्यापान निर्गुणि भगप
दिव को हिप्रमोजनदन ४१ कोकुलेन विला
लेन विद्या हिमनु ये जन अकुली नोपीवीही
सो देवता इव पुजाने ४२ अस्यां च दशकुली
जन्मा ल क्या प्रयो जन ह विद्यान भया पाद मानु

राम

॥१३॥

भजते तार्व

विद्यान भया पाद मानु भया पानि विद्या भया लो देवता
रूप जागदन ४२ नावा धिरे भवे दिद्या पावना लो
दति उतिरो वगते पारेनो कापे कि प्रयोजन म ४३
अस्यां च विद्या भन्या कोङ्गा जलो होन दिन न्या पादि
उगा को प्रयो जन क्या ह तसंय विद्या न पदं जाल भ
भया लचाहिद ४४ अस्यां सर्वत्र पुज्यते पि विबं सो नि
रर्थक वासु देव नम स्या ती वसु देव नने जना ४४

चानक
॥ १०॥

अस्याय गणाय देवि सर्वे लपुजा गह्वरि वावु दोर
अप्यहं देन कते भग्या श्री कृष्ण लाइ सर्वे लपुजा
गह्वरि वसु देव लाइ को ही पानि नमस्कार गदे नम
४४ गणाय वीर्य दुरं दुरं तपी वस सा सत्ता केतकि
गन्धमा ध्या पश्यं गह्वरि नमः पदाः ४५ अस्याय
गुणा वंत्त सा पुजन कारि टा लाइ नपनि ला कहर
उत्तहाउ मा पुजन कते भग्या केतपी पुल का सुवात्त

राम

॥ १०॥

अस्याय जगल मा गया जलो हो ४५ विद्या तं च नृपत्य च
नहि लप मरा कत स्वदेस पुजितो राजा विद्या सर्वत्र
पूजयेत् ४६ अस्याय विद्या राजा इह मा विद्या
हो हो केतो भग्या राजा लाइत आ फल दि स मा मा च
पुजा गह्वरि विद्या लाइ त सर्वत्र पुजा गह्वरि तस्का
स्या विद्या धुला हो ४६ हे के नापि सुपुत्रे च वी
द्यायु के शास्त्रा गुना कलं पुत्र्या निह न च द्रष्टव्य प्रका

यानक
॥ १५ ॥

स्माने ४७ अस्याय विद्यावत नानि रस्तायके
होए नपा पानि श्या प्राकुलकन वदमा भया कारा
विजे नपा लो गारि ४७ विद्याया भाजरां कधि
नका श्वेद दस्य भाजन उमयो भजन का श्वेद का श्वे
नोभय भाजन ४८ अस्याय यो ससारमा को हिवि
द्या का भादा हुन को हि धन का भादा हुन वि
द्यायानि धन पानि कहै देर विद्या पानि देन धनप

राम

॥ १५ ॥

विदेन यो ससारमा को ए है हो ४८ नमति फ
तिनो विमानमति फतिनो गुणो नाना सुखा का ह
रपुर विवि घने न वम नाने ४९ फला को व
हजो नाना गुण वत पानि स पानि स मुह सुखा
को का था सुख नानि नानु देन वरु भगद ४९
नहि कपि पिब त्वारि स्या का ले नयो जयेत आह यै मे
धुन निद्रा नया स्या था है मे वन ५० अस्याय वारयो

यानक

॥१६॥

या

कामावसाया कालमा नार्ति क्यो को पन्था नवा
मुनि योग नानु नलुन पाठ नगर्त ५० आ
हारे नानु नैया बी म पाहु कू न जाय मे अलक्षि
न नानु नैया बी म पाहु कू न जाय मे अलक्षि
सव्य का न गाना पापा दिरोगा दिरोगा अणगपा बानि
या नानु नैया बी म पाहु कू न जाय मे अलक्षि
नानु नैया बी म पाहु कू न जाय मे अलक्षि

राम

॥१७॥

रा अश्वि वाद परो नीत्यं ये मरा जगरो हित वेद वेदा गता
न्या जप होम जान्या अतिर वाद दि न्या यस्ता वा स्मरा
कनरा जा का पुरो हित नानु ५१ प्राज्ञा स्तिग्धो महिप्रा ल
नुद्रकर्म विवा जित ॥ विदू बपा त्या गित मद्रु खलम क
खम् जानिको मल दारिया का मनरा न्या न्या गित
बडु खवरो वा माना यस्ता कनरा जा गानु ५२ कुला स
लक्ष्मी पित न न्या यस्ता कनरा जा गानु ५३ कुला स

शानक

॥११॥

क्षोराजा ध्यास्तो विधियते कुलाशिल गुराने पुक्त व
याको इन्द्रियजित गुणसाम्य धर्महि न्या शर्वे का ममा कु
सलभमा को सुद यस्तु कन पुक्ति पागुर् ५४ कु
रव्य सानितल धमपुर्ग ल्य सदा जर्वे स अनाय वाप
कनारि वावि वास्य विर्यो जयैत कुकर्म मायेहन
नगन्तु लो भीयु हकारि आस दामा नहे रिष वगन्तु
यस्तु कन मा नि क न्यानु ५५ मूम वृत्ति हिना दी

रामे

॥११॥

रसर्वरजपरिष्काराविश्ववसायिवधर्माव्य
होतिदीयते सर्वैस्त्रिभुवनानांकोपरिष्कारा
गन्ताविद्वानागन्ताकनधर्माविकारिविवा
रिगर्ग ५६ आगुर्वेदकृत्वाभ्याससर्वशःप्रियद
मन आग्याशिलयगोपितैश्चैवविद्वाना
वैद्यासास्त्रज्ञानानादिभेदजान्ता यौषधज्ञाना
लोकस्त्रिभुवनानावडाशिलकृत्वाकनवैद्यगर्ग

५७ पिच्छपीता महादक्षः शास्त्रज्ञो मिष्टपाचकः गुचि
चाकरीनचैव रूपकाः पुंसस्य ते वाग्वदाज्यं केचि
सिपालुमास्वजान्याः पुचिसां हि जयाकाकन धानस्या
गर्भ ५८ सकृदुक्तगहिता यो लघु हस्तो मिताक्ष
हः सर्वशास्त्रसमालोकि ऐश्वर्यकुरुते । एकवे
रुकाह्याको अथ समजन्ता चाडोलेष न्या सर्वसास्त्रको
अभ्यासगन्ता किन लेखकगर्भ ५९ शशिलावतारन

वाचक

॥१८॥

राम

॥१८॥

चक्रो बलवान्निष्ठदन्तः अप्रमादिमदादक्षः प्राने हा
र्यउच्चाने शुकाको अरु बाजा न्यावलवान् लोकसि
तामलन्याः कोमलनिपुणा हृद्वा कन दान्या गर्ज ६०
समस्तकृतसा स्वज्ञः परिउत्त स्व जितप्रप वैपसि
परिशोषनः शिनाथ सो विधीयते सर्वसास्त्रज्ञा
न्या हतकिता अलसिनमभन्या सुते शलाकनसदा
गर्ज ६१ समस्तह्यसास्त्रज्ञो वाहने वपराजित

लोप्यैवेत्युक्तो वेत्त इत्येव सो विविचयते: घोदाको
वानक शास्त्रजान्ता लज्जार भानि उक्त भूदो रश्मिजनयता
कान्तमहवागिर्गर्भ ६२ मेधावीवाक्मनु प्राज्ञाज्ज ॥ चना
पञ्चसक्तः पितृव्यव्याप्तौ नादि बह्वर्ह तो वावीप
ने उक्त पान्ति पु राना सिपात्रु अकादो चीत्तु
जाउन्या गविर् सत्यवादी यत्ना कान्त इत्युक्त ६३
सा विवक्ष्य बभूव्याह्व वदा निगूह्य क्षया यत्न

॥ ५५ ॥

राम

॥ १५ ॥

वदति राजा भगदागा रूखै वच राजा का दाका को
गुगल क्षम यस्तो हो यस्तो यस्तो माशिरा रूखा पाह
राजा को भगदागा रूख ८६६ ६४ युनरवकुलीना
नादया कुवतिसा धव आदिमा व्या वस्तानेषु ननेया
स्पतिवो कयाम कौलेयपापानिकुव वनमा
निस कन काममा लाउनु तयो केले पानि नारस दे
न ६५ पामिदने सुगुगला सर्व सुदे दो सा रूक

वातन

॥ २० ॥

बलम् तस्मान्मन्त्रं सहस्रं कुप्राज्ञैकः प्रमत्तस्य
पाण्डित्यं ६३ गुणमानं ६४ मुखं ६५ दाह्यं
६६ नरकात् हजात् ६७ दिव्यपाण्डित्यं एक
कोस्य हगु ६८ प्राज्ञेनियं ज्यमानेनः सति
राजस्य व्याग्राणाः यस्य स्वर्गं निवासं च युक्तं च व
नो गम्यमानं जनैश्च न कनकाममाला इकन राजा
कोति नगरा इह इहलोकमा यथाधनं प्राप्तिं यथा

राम

॥ २० ॥

कमाख्यगवास्तुह ६७ पूर्व नियोज्यमानेन वया
दोषा माहिपने प्रयश शार्धनाश अनर्के पनन क्रव
म म्भवेकन कामभालाई कन राजालाई तिन दो
सहुछ इहलोकमायम वननाह पाहो कमाना
वातहुछ ६८ तस्माद्दुमी श्वरानि न्य वम का माय
स्तिद्रप गुण वंत नियुजान गुनहि न विवर्जयेत् न
स्कारन राजाले धर्ममृष्य कामवडा इना कन गरीशकक

वानक

राम

॥२५॥

॥२५॥

न काममात्रागुणगणहीनकर्मद्वन्द्व ६६ यनकि
चिन्तु सत्तु भूत शुभ वायादि वास्तु यम तेन सप्तज्योतिष
जास्तु कर्तुं नैव कर्तुं नैव वाक्ता हस्तले शुभस्य शुभकाम
गत्या को सर्वराजा कर्म प्राप्ति ६७ पाप पुण्य को भागला
५६ ७० यथाहि मपरि क्षेपना पक्षे दननादनेः त
आपुरुष मयो वैकुण्ठसिनेन कर्मणा जज्ञा प्रकाशे शु
गामानागाह काहि तादनागर्हि शुन भलो मद्राथा

हाईद नत्ते कुलशिल कर्मले पुहू य हाईद ७१
ज्ञानव्याः पुष्यशोभुत्ता वा धवा व्यसनागमे आपत्कालेन
मित्रभाष्या चाविभवक्षये कामचुदाउदाचाकार नलोम
दोथाहाईद इः खपदाभा भाइहत्ता थाहाईद आपानेप
दामित्रव्याहापाइह गारि प भया पादि स्वाक्षि व्याहापाइ
इ ७२ भुत्तावदु विवाशज्ञउत्तमा वयमध्यामाः तेनियो
ज्यायव्यायो गप विवि विव पि कर्मसु राजाले चाकार ह्मक
नरुत्तममाका चादिया विचारगारि यथा यो गप काममाला

धावक

उनु ७३ आलस्यमूर्खरुस्तव्यसतिनशठ अ
मनुष्यमपक्वचेत्पजेद्रुत्यनराविप अलसिगपि को
धीगुमानिवटि पाकापगत्या असतोविनिमककोशो
जोनगत्या यस्ता कनचाकरनरावन ७४ त्यजेत्स्वामि
नमत्पुग्रमत्पुग्रकृपया त्यजेत् कृपया दावसेषज्ञतस्या
वक्तुनाशनम् ठैरगालिगन्यामापाकोराहेवकनचा
कारलेष्टोदनु उस्वपनापानिगालिगन्याकिहिप्रविनादि

राम

॥ २२ ॥

॥ २२ ॥

या कनकोदनु उस भनापनि विवेकगन्या कनकोदनु
उस भनापनि आफले या करिगन्या को हिंसा प्रगन्या
कनकोदनु ७५ वा भाया सुतो मूर्धः पुष्पो वा वा
विद्या काः निस्त्रे हो बहु वग शत्या ज्यो स्य च यह कु
खम खस मयानि नर ह न्या स्वात्मिकन मूर्धो
रा कन अज्ञा पाको काम कुरा ननु न्या चाकर क
नस्त्रे हन न्या वहु कन पानि हो डि वस्या सुषपा इ ह

423A

॥

11211

आमा बोइद सुक्या पादि बाबाले पनि आमा कन दो
उदह तले नान ७८ कुतो बाल निना निद्रा अरु पुन्य
कुतो गतिः कुतः सौख्यं दारिद्र्यं पुजर्न स्य कुतः क्षमा
गुणा या चारिद्वार को निद्रा हृदय असनी सी को भान
न हन दारिद्र्य को सुख हन पुजने छुड क्षमा हु दन ७९
तस्मात्स्य कुतो मानो पुज न स्य कुतः क्षमा वक्ष्यामीति शां
कुतस्मिह कुतः क्षमा वक्ष्यामीति शां बाला इका हा ना न

बानक

॥२४॥

इ इजने देउ का हा श्रमा है वेशपा देउ का हा प्रीति है
दिनार देउ का हा मन है ८० इबलस्य बन ए जीवा
लानारु दित बल वल मय मय मानन्य वी ए एण मनन
वल म इबल का बल राजा हुन बाल क का वल रुन
मय को वल न बाल रुन चा को वल रु टो बाल रु
८१ अनाथा नाद रिद्राणा काल वृद्ध तपस्विना म भ
न्यायपार भाना ना सर्व सा पाथि वा गतिः अनाथ

म

॥२४॥

कोशी ६ को बालक को ६६ को नृपति को अण्णापल वि
विषा को मनुष्य को गति राजा हुन ६१ व्याधिन
स्याय हिनस्य शत्रुभिस्त्या सितस्य च ६२ शो कदम्बस्य
शुद्धदशनेषो वधम् ६३ गि को धन नु न्या को सुकुल
नालाश्या का मनुष्य को ६४ दययाशो कले राहं मणा का प
चम्य को इष्ट मित्र को ६५ निपाया पदि भौषा विपाया
जेषा दह ६६ आनो वसने प्राप्ते दुर्भिक्षे सत्रुविश्र

बालव

॥ २५ ॥

हे राजद्वारे इमशा नेवा पति हू नि स बा ववः शेष भया
या दुःख दुःख रामा अत्रिक बहू रामा शत्रु तिन जगदा हु
रामा राजद्वार मा सक स्य रामा इमशा नमा जो सगर
हं नरक न पा मब पु भन २४ भाव रुद्रि मनुष्या
एण जात व्या सर्व काम भु भाव न रु विता कोता भाव न
इहि ज्ञान नमः सर्व काम मा यन प को पाव न न न प
६ कहि भाव ले स्या शि मे को पाव न न ना गरि ह

राम

॥ २५ ॥

यो इत्युक्तमाभावात् ८५ नुदेवो विद्यते का
हे पाषाण नवमं राम ये भादेष्टु विद्यते देवतस्य भाद्र
वामहस्तः काठमा नित्यं गामा पाने मादा यापनि देव
ता देवः सर्वे का प्रोक्तमाह देवता हे तस्का एताभावे
लोहो ८६ शिष्याणां देवता चो मरी ज्ञानपाचाय
देवताः देवता योषिता यन्त्रिंशत्तुष्टा जन् देवता
शिष्यका देवता गुरु इन् गुरु को देवता ज्ञान हो स्या

हि को देवता ह्या मिः सर्वे को क को देवता ब्राह्मण

८७ विप्रप्रभृष्यवाक्ये. माचार्यपदं देवताम् मान

बानक एतपथापविष्टिमिन्नपञ्चपञ्चाब्जतम् ॥ ब्राह्मणकनूजाग्र

ॐ हनुं ग्रामकान्देवता ॐ हनुं ग्रामकान्देवता ॐ हनुं ग्रामकान्देवता

॥ २६ ॥ कर्तुमिच्छते हर्षं रक्तं गुह्यं गुह्यं विज्ञानिनां वशां नोप्रा

हमणोगुरुः पतिरैको गुरुस्त्रीणां सर्वेषां गतोऽहं

श्री लक्ष्मी विमानेन्याः श्री देवता या एव न लिखानि न्या

राघ

॥३६॥

ब्राह्मण इत् स्त्रीलेमानिन्या आक्रा १५४: सर्वे जान
लेमान पत्न्या अभ्यागत हो १५ उत्तमस्या पी वरा
म्य नीबो पीठा ह सागत: पूजनी यो यथा आ य सर्व
स्या अभ्यागतो गतः उत्तमजाति को द्रुमा नी च जा
नि पाहु ना अभ्यापनैः सर्वे लेमान पत्न्या अभ्यागत हो
पनि पूजा गत उपर १६० देवता पूज ग द्रुमा भक्त्या
दानेन पूजयेत्: इदं पूजा पदा द्वा वि प्राणा मधि

यानक

॥ १७ ॥

पवित्राय पवित्रे देवता पूजा गर्तु वै सादि वाका ह
तकला पूजा गर्तु उपकार न गारि शुद्ध कन पूजा गर्तु
मान आदर गारि ब्राह्म कन पूजा गर्तु २१ वर्ष स्थित
लश जान लघो मल नु ब्राह्मणः ब्राह्मण पच पूज्य
नैतत्र वर्षः सनातन राजा कामल भन्या धर्म हो
ब्राह्मण कामल कन पस्या हो तस्का एण ब्राह्मण ह
काजा हा पूजा हुँ ह ताहा धर्म वस्या को ह धनि

राम

॥ २१ ॥

जान ६२ आचारफलनेषु आचारफलनेषु
नम आचारफलनाप्रतिभावाहमलक्षणा
ननु क्वा का अपना धर्म लार् आवा धने आचा
ले धर्म पा नि वट्ट दु धन पानि आवा ऐल ई ई स्वर्ग
वास पानि आवा ऐल ई ई आप्रा शी ए मा के हि पूर्व
जन्म के पाप चिह्न यथा पानि आवा ऐल नास ई ई
६३ योज्य योजनमहि व ए न क कि र्व य विष : वि

भवेदानशक्तिश्च नान्यस्यतपसः फलम् । पेक्षावस्तुपाउ
 दामादौ रैषा नस्तकन्याशक्तिभयो । रामो स्यात्तिस्रविंश
 वानरः सगनु शक्तिभयो । आ फनाटे । खनहु दामा । दानगर्भस
 कन्याशक्तिभयो यो नित्यो कथो रैतय स्याते पादमाभिम
 ॥ २४ ॥ होइन २४ बाले बेवा बो धर्म मनिन्य खलुजी दिनेत ॥ २५ ॥
 फलानामिव पक्वानां शाश्वतपन्नं कुवम् । बाल
 के माधर्मगनु यो सारि अनित्य ह । ऊषमा हा फल्पाका

फलपाक्या पादे पावे प्रसद ह न पाको खलु द्वेन । य
 निभनु सको द्वेन । तसौ गुण भयो पादे । मावे माला
 भानि भनु शक्तिदेन २५ । सप्तमश्च हतो धर्म को धे
 नैव हततपः । अहं व हतजान प्रमादेन हत प्रसम । अका
 लार विवजा ह गन्या को धर्म खरा पह ह । ठे रिमाउ म्याको
 तप स्या यशव हैरु । निभुय न भया को जान खरा पह ह ।
 विनिगयो पादे अनिशया को मवे खरा पह ह २६

धानका

॥ २६॥

अदि प्राग्जै हनो हो मोहना भुक्ति रक्षा शिरो उपजीव्याहमाकं
न्यास्याथ पाकजिपाहना नवल्पाका अग्निमा होमगर्वा
को व्यथि पावात्तन धेये कलागे गन्थाको भोगव्यथि
द्वः धनवस्तु के हिलिक ना दे पाको कन्यादान व्यथि प
कसे कोनी मीन पका पाको अन्नपानि व्यथि ६७
दारिद्र्या विदुः स्वाभिवेचने वस्तुना गमः अदातुः
फलमेतानी नान्मादान विमिष्यते दारिद्र्यं तु ये

राम

॥ २६॥

पुस्तक
संख्या
दिनांक
पृष्ठ
विवरण
मूल्य
स्थान
दिनांक
पृष्ठ
विवरण
मूल्य
स्थान

गिरिः इषिः पुनः अकस्मात्तथा पति पनुः किल यात्रायाप
नः यतिः स्वस्वे पुर्वजन्म मादलनगया को पापने हु
नकाशा दानगनुगर्ह ६६ पुलाका दवाधाने शुपु
विकावजं तु नादशास्त्रे मनुष्येषु ब्रह्मवर्मादिः क
ना धर्मगगनामिनुम्य हतकाला पुन भव्या धानका
पवता जस्ता जेतु मा पुनानि जस्ता नकाशा धर्मगनु
पद ६६ त्रज दुर्जनितस्य भजसा पुस्तमागम म्

चानक

॥ ३० ॥

कुरुपुराण महोपाय स्वयंजित्यमनित्यताम् हे पुरुष
 जन्तुहो इज्जनको सत्यगोबिन्द साधकासम्पन्नगाः मधे
 प्राप्यगः शानादीन नित्य भया का पत्र हे कनकम
 नः यो बर धन स्वामी सपति सर्वभू नित्य भविष्य ७
 १०० शत श्री चानक सार संग्रहे प्रथम सप्त
 कम १ नास्त्यर्थ वलुषो धीशः नरेन्द्रानातिव
 शुषः वेदार्थ वलुषो विप्रा इतराचार्य शुषः ॥ पाणि

शाम

॥ ३० ॥

कुरुवा आषाका आषाशा खेला राजा हुरु का आखानि
 तिहो ब्रह्मण हुरु का आखा वेद हुरु उरुमाका का आ
 खा विवागुरु १ शक्ति विमिषि धर्मज्ञ पाप पाप समाग
 म राजानो इति शक्ति स्या यथा राजा लया प्रजाः राजा ध
 म्मात्मा भया प्रजा पानि धर्मात्मा ईहः राजा कायात्मा
 भया प्रजा पानि पापान्मा ईहः राजा को वृत्ति नानि कोम
 या प्रजा का पानि वृत्ति नीको ईहः राजा लगया वृत्ति

वाराण
॥३९॥

प्रज्ञातेपानिगदः २ उद्यमसाहमेवयेवलेवृष्टि पण
क्रम यदेतेयस्यातिष्ठिततस्य देवो विशक्तिः उद्योग
ययो नहया इमयो बलमयो वादि मयो पराक्रम मयो
यादृगुशा जसमनुष्म सिनद्ध त्यापुस्तुष्टिचिकनदेव
तापनिस्कागदने ३ साम्य दानेन भेदेन क्रमेण व
बलेन च सव चरु सदा शत्रु पानिनि योनरा विधिः मिता
पगारि कणा पानि यन दे वा इक न पानि धन बल लमा इक

राम
॥३९॥

नपनि बलगारि कणा पानि सर्वे वस्तु रवचगी रिकनः राजा
लेखतु नासगनुपेक्ष ४ पादयो गी गुणो गुणो भोगिष
रिजनेः सहः शास्त्रे बोद्धा एणो यो दानु पनेः पंचल वन
म सुपा चमा दानगर्भ सग्रा यमान पारहुर्गु गणि
हस्तदोष धास हु सर्व जीवित्वा बाहु गारि सग्रा भोगग
नु शास्त्र वस्तु पानि पा वृत्ता जा को ल दे न होः ५
उत्तम प्राणा पानेन सूर्य भेदेन पाने जयितु सुख सर्व

वानक

॥३२॥

पुदावेरासमनुस्यपराक्रमे ६ अस्यार्थ वदास
उभयलाइनमस्कागारिहातलिनु भेदगारिकनपनि
महाकनहातलिनुधनदिघाजोमि कयाहातलिनु
पराक्रमभयाकोकणपरा कनेगारिहातलिनु
६ आत्महिंदूपादयादिआहिंदूपादस्वर्ग
गृहकनईवागानिपारभाबचलसयेत् ७
स्यार्थ आकनाइवभूकोकननवाहनः भूकोको

राम

॥३२॥

इषआफैलेदुताइदिनुभूकोकोदोषकाकुमागुपु
गारिहातलिनुकेलेपानेप्रकासनागउ ७ मनसा
चितीतकाय्यवचसा न प्रकासयेत् मचलसरा
पुढान्माकाय्यसिद्धिअजायते ८ अस्यार्थ
कोहिकाय्यमापनिमनयाचेनाउनु प्रवर्तप्रकास
नगनुमंजुगपुगनरकाय्यसिद्धिइह ८ उपका
उपकारगृहिताणसनुमृदरेत् पादलनकास्येतक

टेकेनैव कनक ६ सुखाय उपकार तासु लेग
 आपनि ईद कसो भ भागो डामा का ठो मिका को का
 वानक ठेले मिका नू ताका रासा सुपनि मित्र ईद नू ६
 वहेद मित्र स्व धेन पावता ले विपय ये नये वसाग
 ॥३३॥ ते काले विद्या य निवा इमनि १० सुखाय आ
 फना विपनि मा रा तुला दुपनिका धमा च हउनु पद
 आ फनु काम प्रजा पादे आ सये शारि मिल काउ

राम
 ॥३३॥

दोहे मिलता उन १० होजे के कद क धेने पशु के
 नया बसे पशु वद क ह्या न लोको य मधुरः
 प्रियः ११ सुखाय हेजिहा निमिसु धे
 धिरो वचन बोले पाशु वचन क्या न बोल देनो या
 लोक सवे मधुर वचन कन पिपारे पाद वतन य
 मधुवाल ११ जिहा गे वस ते लक्ष्मि जिहा गे मि
 ववा धवा जिहा गे वचन चापि जिहा गे मणि धव

॥३३॥
 ॥३३॥

वागक

॥३४॥

लक्ष्मिपनिजिहाको दुष्पामा बलरुद्धि इष्टमित्र पनिता
 हिदल जिहालेगारि बंधनपनिमारापनिहु
 १२ प्रियवाक्याप्रदानेन सर्वे लब्ध तिजतवः तस्मा
 तदेव ज्ञातव्य किं वाक्यं नदरिद्रतापिपारो वचनवोल्या
 सर्वे लोक बुद्धिहु तस कारन तेहि जानी कनमि
 थो कुरो वो लनु वचने दरिद्र नहुनु १३ अग्रिरो
 गार्देव शास्त्र पाणि धनपह सब राए पहारि चव

राम

॥३५॥

डेने आलापिन घरमा आगो लगा उन्या विषय बुवा
 उन्या हान मा शस्त्र लि कन युका को बन हन्यो छैन
 वोन्या स्वस्ति लुत न्याय मिलाइ आनता पिभन
 १४ आनतापिन मा पित्तम पि वेदो नपागम जि
 यासंत जियो सो नन ते नद हलहा भवेत यतिगन्या
 आनताय कनता वेदाग जान्या ब्राह्मण भयापनि मान्या
 देखि ब्रह्म हन्याला गेने १५ राबु पाल यते नित्य सत्य

यानका
॥३५॥

धर्मपरायणा निमित्तपारसे न्यानि पन्नि विपिहा पालयेत्
राजालेखन धर्मगोपुजा कन पालनागर्न पसे न्याजी
निपुवि विपाल नागर्न पद १६ पञ्चपुष्प विचीन
यान फल देन कारयेत् माता कारु वीगाणि यथा
जाणा ती सात्ता म राजालेखनी नीरु फलमात्रैरि
पुवोत्तरा उखेलु प्रजा को संपति अनुसा द्दु गनुत्र
न्यायले न्दु वरानहन् १७ अग्नि मृदासिनेम

राम
॥३५॥

स्वाविष्णु यो न शुद्धं निमद्रात्मा सुवसव उशस्य
निपो सनु यो मी नयो पशुद यो यवो मयो न्दु पोग्ग
मति विवेक नहु न्यामनु व्यसव ज्ञानमा नास ह्द १८
अतापे व्यपक नयो ह्य नाथ कन ह्यिय आतुरे सव मे
क्षी वस च सर्वत्र जल्पति आम ह्य मि नहुदा मखव च ह्द गर्मा
राजान मया का देस माजग दागन्या रोग इ दामा सर्वे ध्या
करवान्या अवस्य नास ह्द १९ क काल कानि मि

चानक

आशिको देस को व्यागम कस्या हका वमे मक्ति रिनि योना
सुदुम ह काल कलो हो मेरो मित्र को हो कलो देस हो
कलो ग्राम दाणिषु च हो सक रको ह मेरो पक मकपा
हो भनि मरा सब दा सब काम मा विद्या गनु पै ह २०
सिहा दे कनि क्षत्रु ज्यो कक तान् वाप सत्य वसिष्ठ
नृषद श्रुता सि सिगद जातु सिह दे विन दक गहा च
कलो दे विन दक गहा करु सुदे विन दक गहा कागद विन द

माम

॥ ३६ ॥

॥ ३६ ॥

चगपा कुकुर्दे विन दक गहा हा दे विन ति नृपा मनु
अले सिनु पद २१ प्रभुत कार्य मत्य वा यो नर
कर्त मित्त सिकार मेधुप काय सिहा ह वा विविध म
२२ अस्या व को ह का पु गि ना यो न सिद्ध न गरि न
हाडु यो प क ग हा सिह को नी न २२ इन्द्र पाणि
च सप सव क वत्य दि ता नरः कार्य का लो प प ज
नि सर्व कायानो शा वपे न २२ अस्या व

वानक

॥३७॥

वकुब्जा जै जानि मन व्यले आ फ नुका प्यन मुंग न्याल
सम्पत्तान भालु काज को आ सा पया पदि खेव
काज सा धनागनुयो १ गुण वकुब्जा को हो २२
प्रायत धान वरु हे चस विभाग च व कुबु स्त्रियमा
कस्य भजित सिधे चना कुरुदा २४ गुस्सा र्थ
सर्व उठनु सा उतित मुद्रगनु आ फ नादा ज भा
वम बा देखनु स्वदिन केता कटि बाहुना गरि बानु

गम

॥३७॥

पति ४ गुण कुरु रा कालिनु २४ गुप्ते मेधुन हस
न काले यत ग्रह गुप्ते मारिनु उत ब पय सिधे व
वायमान २५ गुस्सा र्थ मेधुन गुप्ते गनु विना
पनामा या को सगुद्रगनु दा ज्यु याद सगुद्रगनु
हका रिन हनु उत हुनु शत भगुण कारो कालिनु
२५ वका सिचाव्य मन ह्यु सा रोद्रा सिगु वत
न ज्वा मी भक्त भल यव दन नानती गुणा २६

बानध

॥ ३८ ॥

अस्माकं भगवतः श्रुतं न भवति नो बहुनुवादे
उक्तं नृणां मिथुनं हनु सुते हुन इति गुण कृत्वा
सिनु २६ अविश्रान्तवहे हानि तिनो स्प चन विद्य
ने उक्तं नृणां भवेति नृणां विद्या तिनो स्प चन विद्य
२७ अस्माकं नवि साइ कान भारि वी क न्या चि
लो नाना नमा न्या ठे थो रि यया पानि सता स इ
न्या रति ३ गुण गदा हा को जी न २० विहारी

राम

॥ ३८ ॥

तागुणं प्रोक्ताः पल्लुविद्या प्रयच्छति संजे शक्तिरिन्द्र
वति विकल्पश्च विद्यमती २६ अस्माकं शक्ति
२० गुण जस जल पाले निपा को ह ना यो विनु क्षयाय
उद्य नडा उ को ना सग ह जाहा न्या म उद्य गया ता
हाजि न २८ अष्ट र्वा यो मनु ध्याता मनु स
न प्रचे नला प्ररूप रोग का र्वा उमा च्चति विग्रह
२९ अस्माकं साणा मनु य ह्म अफ नाम न को ड

धानक

॥३६॥

स आ फने सनमा पादने पस्पाउपकटा रिसा उह
जगगदने २६ मेको दर पयगि बापे च
रास महा रोवे असा क्षितावी न स्यति भ कपा इ
व पशिणा ३० अस्यार्थ पेक पेन इदक
पाल भूया को ३१ दारा बभापा का पंदि हू हू
दम धेन जशरा गया २ मदि जान्या छन जस
व न्या फणा दाम ३२ अक्षित जगम नगल ३०

यम

॥३६॥

वसने सति कुवंति ये न के ना पा सं हति नृ क्ष वाना गा
पुहे पुरा दा स ए वि पदा ३१ अस्यार्थ विपति च
या पदि साना जात देठ सित पाहि भज ना ग रिय
पद को भन्या श्री राम जदूला इगा हो पश मा वा
मेरा सनु बंद असा गा ३२ वर सा मेल भया पादि
सर्व का काम हुने हि दान रहत ले के ले पा न भव
या को समुद्र मा सा गुवा धा भ्या ३२ सय शत

चानक

॥४०॥

यमं पंचविंशोऽक्षपादस्यैवैयं च मया एतु
एष पंचोक्तस्तम एषि विष्टा राजालेह्यो धला
इत्याभा गदने तिमि हस्तय भाई हामि ह पा
वभादु विरोध भया पुनैयुका सगकृता ए पदामा
ः एक स्याव भाइये वै लुपद ३३ हिः श्या
मिन्वा चम मानि कुत्वा वैर मया न काम ज्ञातयः
समतिया जियः ये काम काज माया अत्रा फेह

राम

॥४०॥

ह ३४ चित्तज्यो मनुष्याणां मन्वा नीमैथुन
न्याः अमो भागाः सिद्धा वस्त्राणां वाज्यान्वा
मनुष्यको ज्ञा चिज हो दो द श्वर पैथुन हो स्वा
स्तिको ज्वर वसमनहुनु वपदा को ज्वर घा म
हो ३५ अज्वा जणननु व्याणा मन व्यावा जिनाज
रा अमैथुन जण हिणाम श्वारा मिथुण जय धैरहि
दन्ना माणि सचा रदु वाहु ह धैर दिन नाह मा बादि

शानक

॥५१॥

घोडाचा वैवधाहं मेधुननपायास्वास्मिन्नुडिडुदे
मेधुपागयापदि घोडावुवाहीह १८ कथावति
प्राध्विनाकष्टावातानि एषयाः भूतफुवधिसेपुके
सर्वकेशदाद्रना मुकाको अधिनमा हनुकष्टह
घानभपावस्तुपनिकष्टह आद्यधनि भद्रपदि के
शातभये भन्यासवे भना कलाकष्ट भनु १७ शु
विनीव्या विनीमुखः प्रवासापस्ववकः जीव

शान

॥५१॥

तोपिमिताः पंचपंचैवेदुः खमागिनः सर्वमाग्यास
वेमागिहिन्यासुरवसवे पादेताहि दन्यामुका को
वाको गिन्या योपाचजिमा पति मन्वा को भनु
३८ अहस्यापमनाही नगाह गोरखवजि नाम
प्रानकूलकलत्रबनरकस्याय सावित्रीः धारमाशु
नचादेरखली भगापाह धारमादाहडु वनजया
पाह भन्या को नमान्या स्वास्मिन्ने योपा पाह योपनिह

कानह को नाक भगु ३६ रथलन घो पदरा
 मोहा १ गामावन क्षमः घन बोली पदाही नात दातेहः
 रथ भागान् १ लो जे को पापुहु ना ली राम चंद्रहु रवी
 यानका भया सा रगा र्हे ह दना लेल क्षम ए जीउ रवी भया
 वा कलो र्हे हु ना ले सी ताहु रवी भया न ४० यो प
 अनित्य प्रापति भुक्ते वै वादिनादिने नन वलघु तायाति
 यदि स क क्षमो नः जो मनु व्यज र्को वर दिन

राम

॥४२॥

॥४२॥

दिन जाइ खाह त्पो र रुजला भयापति हउ के हुइ ४१
 परा भया व र्को वरा पातन क्रियः पा ल्य व ग र्को वरा स क
 स्या पा भिय हेरु मुर्का को भु भया गा भयो मुर्का को
 वर भयो मुर्का कि म्वा लि मुर्का को द्या मा व र्धु पात
 को कले इ र्को पाति ल क्षि म ना एा ह ४२ असो मि
 निो विद्या न सो वा पु व वा नः असो मा विध वा ना
 रि उ र्को व पु नि कि ला पदि न भया पादि धन न भ

शानक

॥४३॥

यायाभयस्यमानुषैर्न दोषः प्रयापदिशुक्कोहि
नभयापनिशुःखैर्न दोषमाति प्रयापदिविधवा
प्रयापनिस्त्रासिकोदुःखैर्न ४३ विप्रवापवपू
ज्यतेनसरिगानीदोहिनाम् वाण्डोलेपिनाशे
यस्यास्तिविपुलधनम् सर्वेणउमाधनैपूजाइह
सरिकोपूजाइदेन प्रसहधनदुःखामनुष्यवाण्ड
लभयापनिश्रेष्ठइह ४४ धनमाइपाधम

एम

॥४३॥

धनैस्त्वप्रतिष्ठितं जीवति धनिर्नो लोका मृतापनिध
नाना ॥ धनैर्जनहुलो धर्मभनु धनैर्न सर्वे को प्रतिष्ठा
इह तत्तस्य धनिकनमा विजिउमाभनु धननु न्याला
इमस्याकोभनु ४५ अतिस्वपदमापनैर्धनिको पत
नाइयज भुत्तु बुशिवा सैल सद्रो वजेनपाप्यते धै
सपातेमा चर्या पादि स्वस्त्वा भनिडाइनु प ६ अतिउ
इपर्वतभयापदिस्वस्त्वा इइद्रका वव लेखस्वा ललाध

शानक

॥४४॥

निमपदि ४८ को पक्षो पक्षको वित्तिके तुखा
निचोरी गोनाम् यस्य पाप्मा त्वत्तु अक्षतस्त्व
कगहे सर्वेयो कल्याणा को कुत्तल्लु नखा नुहरेगी ५
पापदि कया सुष हि नको स्वास्ति सलो बी दे नत्
को या या ह्यका हा हि ४७ सुपि सैक बदिनी
तप सुखे नित्य योगी नाम पाप्मा सर्व सुखदा
यस्य तस्य वित्तोत्तरे ग रुम् देवक माउ माको सर्व

राम

॥४४॥

सुपि स इद रोगीत भयाम वै सुख हि पन्था को मान्या
त्यास्ति भयामस्को या मास वै उत्तरे हि ४८ सर्वे
रवस दुःख सर्वमिती वस सुखं नदि द्या त्त पा मे न्न भण
गुख दुःख वै पाए को वस मा ए न न वे भन्दा दुःख द
आ प्रा वस पा ए न्न सर्वे न न्न सुख द यति सुख दुःख
को न्न न्न हो ४९ सुख स्या न्न न्न दुःख दुःख स्या न्न
न न्न एव सुख दुःख न्न न्न न्न न्न न्न न्न न्न न्न न्न

मानक

॥४५॥

हरिहरका पाद ६३ ॥ ६३ ॥ हरिहरका पाद सुख ६३ ॥
हरिः प्रन्याको बरु जलो पुन ६३ ॥ ५० ॥ बरु मि ६३ ॥
हरि हरि न्या मय नु नु नि निः बरु पति नु न्या नै व प ६३ ॥
बदिवाका ६३ ॥ ५१ ॥ मय यपा का हा उपा गा गा का गा प्रका
स ६३ ॥ न जगत् कान उपा नो जगत् कान मे य ले को
पा नो ६३ ॥ ५१ ॥ सुसता स ६३ ॥ न को नया न्य ६३ ॥
मागति ६३ ॥ पयो पिलो ६३ ॥ ह ले मय मि न्य ६३ ॥

राम

॥४५॥

धनिया को सगा स्या पदि को धनिया ६३ ॥ दे न भज्या श्री को
हात मा दुध धन्या मि पदि ६३ ॥ ५१ ॥ सुसता स ६३ ॥
दो से न यु धन्या मि सा पदः मागति मि पदि ६३ ॥ न सपा
पि वे स मा पते धनिया सित संग धन्या पदि ६३ ॥
नि धनिया ६३ ॥ ५१ ॥ सुध्या ले जा सो हो धन्या को वनि पति
वागो जले ६३ ॥ ५१ ॥ उत ये सुध्या ले न को नया मि ६३ ॥
पुन्या मि ६३ ॥ सुध्या ले जा नी धन्या मि ६३ ॥ न सुध्या ले ६३ ॥

बानक
॥४६॥

कासगवस्यापदिननिबोपनिनि को हु हु गास्याकापु
लेसगंदासपनिनिहिरमाधाजागरि ५४ कि
कीर्यानिहिरपुर्कः स्वभावोदुतिऊमः पथापुफलम
अस्यः कारवापोनामुतागतः यकाहितानिहिराहंगव
स्यापनिआफनालोभावहोदिसमुपतजलापिहोभया
काआपकोमिश्राहाकोविद्यालेकवापस्यादकन
होदिसनतलेजाउ ५५ सकीमावहुवधेनमकेमिव

राम
॥४६॥

प्रतिदिनः यधुसीसमावृत्त्यानिहिरकिमपुएयते
निकाकोसगरहापनिननिबोमिकोहोदिसयस्कोअ
कोदिसनमदनिमकोबोतजोहलोसकापारेपिमह
उधलेसेवनगारिआपनिगुलिपोहुदिस ५६ उ
सकेषुहयाविद्यापारुलाउपवगप काप्यकालेवस
प्रापनखावीप्रानतइनपु पुनकोमाहहाकोविद्या
रशुकाकोहातमारहाकोवनपोहुवैआफ्राकाप्य

पुनः

॥४७॥

कायप्रकाशलाभेन ५७ इत्यादि चामिवादि
वि. स. हा. धै. व. वा. ध. वा. का. ता. चे. ला. ले. र. वा. ह. पा. य.
को. ले. नो. प. ति. ह. ति. ना. वा. र. ह. वा. मि. त्र. ह. र. प्र. ति. न. म. पा.
का. य. पु. रु. रु. का. य. ला. भे. न. मि. ता. मा. ले. र. वा. कि. रु. दा.
र. वा. दि. ज. मि. ५८ इत्यादि चामिवादि. मे. हा.
धै. व. वा. ध. वा. को. नि. मी. मो. हि. क. र्त्त. वि. श्रु. र्थ. नो. नि. र्क. ला.
नि. र्क. ता. जा. को. मि. त्र. प्र. ति. न. दु. मा. वा. रु. क्त्वा. न. व. ना.

राम

॥४७॥

उनुवनमाफुल्याकोफुनजलोकाप्रलाभेन ५९ इ
हावनहीनचकर्महिनश्रयोनाः निरर्थचितनातस्यम
स्मन्याहुतपोयुथा ज्ञाननहुन्यामिहोववननवोल
न्यानिन्यकर्मनहुन्याकोचेतपनिव्यवहिरवानीमाहा
माकोव्यजलो ६० ज्ञापुद्रुमविश्राद्रुपत्प्याः क
लहतथा चत्वारिणीष्कनयातिप्रभातेपेयद्वारः के
न्याकोपुद्रुमविश्राद्रुमोदपोरकोमृगदायहनकोमेव

वानकः

॥४८॥

यतिधैरैकालाहदेनरहसावैहैन् ६१ निष्कलाकप
रोसेवानिष्कलागनिराहो दोषसंयुक्तमिलस्यश्रुति
विप्रस्यनिष्कला कपणकोसदाशेगीकोमेषुनशिलन
इत्याहुहृष्टासलएकोदेदनिष्कलछ ६२ बापेत्
कुलजाप्राप्तोविदुपापपिकत्यकाम् रुपिणीनेवनि
वस्य विवाहः सदसुकले श्रीनिपनुषलेनमाम्राभ
यापनिवदाकुलकोकन्याविवाहघर्नपिप्रिया

रामः

॥४८॥

पनिनीचाकेकन्याविवाहशान् ६३ विधादप्यम
नग्राह्यमसेवाकपिकाचनम् नीचादपुनयाविद्या
स्त्रीरुद्धकुलादपि अमभवत्तुभयाविषदेविन्या
गालिनुहर्नपायापदिअपविनदेविन्यामिहिकली
नुउत्तमविद्याभयानीचजानदेविन्यामिलीनुह्रीग्ल
भयायतिपाकुलकीभयापनिविवाहशान्पह
६४ कस्यदावःकुलेनातिव्याधिनाकोनपीदित

वानकः

४४६॥

केननवातननप्रापुत्रियुः कस्यनिंसा कस्योक्त
लमादीषदेनगेगिनह न्याकोह कसलेशुवपाया
कोहललक्षिकस्योस्थिपयाकोह ६५ होवो
पनिगणोप्यस्तिनाशुगोषुपोजंतुषु शुक्रपासप
प्रस्यणासोभवति ककस्तः विगुणजितुदे दपनिगुण ॥४६॥
रहगुणतगपनिदोषरह अतिकोमलभया ककम
लपुष्पकोनातवसो हुदतमेजानु ६६ अमृतासि

रामः

॥४६॥

श्रीवह्निपुतंवालभाषितम् अमृतगुणामतिपाया
अमृतशीशोजनजाडोमा अमृतापुत्रुअमृतदवालष
कोवचनपतिअमृतदगुणवनिस्थासि स्वासिपनिअ
मृतद दुधसितरवानुपनिअमृतद ६७ दुर्लभा
प्राप्तिवानिदुर्लपस्तुल्यपिप्रथः दुर्लभाचस्तुल्यारिदुर्ल
पदेवशाप्रीयम् नितापवचनभन्याकोदुर्लभदक्षा
गन्याप्रभुपनिदुर्लभवशीयादिस्वासिपनिदुर्लपिद

पापारोवचनपनिबुलभद ६८ नदिना जा नुवीशे
 स्रणारिनाचपुनिवता नरिनाचनृपुषाह देसाणा
 वानकः यवनावृत्ति नदिस वैमागंगाश्रेष्ठ हन सवे स्वास्तिमा
 पानिप्रानि वृताश्रेष्ठ सवेम नुष्यमारा नाश्रेष्ठ ह
 ॥५०॥ न सवेदे समा आ फुला सुवहु मादे समा श्रेष्ठ ह
 न ६६ पुष्यो व समा दासी दास समा कुलम्
 पाण्यावीर हीन पुस्त यथा एत तथा गतम् मनुष्यको

समः

॥५०॥

दामादो एनाती कया एकमादि सवे भयापनि स्वास्ति
 हन भयातस्को यवन न जलापनु ७० सवे धामे
 वात्माना विषो लपनु तमम् तदर्थ चाप्यनि कया
 शाप्ये के धने न कीम् सवे लपमा स्त्री रुप श्रेष्ठ हन
 न कमा उनुपानि उमै का सी पीत हो स्वास्ति न भया को व
 रमा धमले कागर्नु ७१ कासी होने कुत वानी कुपु
 गे न्यते कुलम् कुपत्री हन्यते राजा एष्ट वी दे सा

वानिकः

॥५४॥

हम्येते धनिगाम्वास्त्रिलेकाननासगदकपुत्रलेकुल
शासगद धनिगाम्वास्त्रिलेकाननासगद वीर
लेराज्यकननासगद ७२ स्त्रियादोषसहस्र
नीगुणास्त्रिणिमाहापते गृहचारः सुतेत्यतिपरि
गोपतिना सह स्पृहाएजस्वास्त्रिकोहजाएदोष
द्वतीनुण्ड याकोसहाएगुहोयजन्मादि
मुसतिभदकेनस्वाधीकोसगपुत्रयतिगुणहो ७३

राम
॥५५॥

कवयः किंप्रपंति किं न भवंति वा यसाः प्रमदाः किंप्रकुर्व
ति किं न तल्पंति न यपाः प्रसिद्धं हस्तो क्वादेव दैनका
गवेस्वास्त्रिहस्तो क्वा गदेन मत्त पा लोले क्वा बो लदेन
७४ पुत्रप्रपोजना भाष्यः पुत्राः पीशापयो जराः
हितप्रयो जरापात्र सर्वभूतप्रपोजनम् स्वास्त्रिदना
उनुदोएनीमीतीहो दोरावनाउनुपीनगएउनुना
निपीनहो सीववनाउनुहितगनानीमीनहो स्त्री

चानक

॥५२॥

पोक वना हुनु आ फना निमित्त हो ७५ मनुद्रावराणा
धूमि प्राकारावराणा गहः नरेन्द्रावाणा देसा श्रीरा
वरणा स्थियु पविषी कनससु द्रव्ये घादीया कोटि य
रकशा पयलिले घरा दीरा सद रा ना हस कुन देस ले घरा
दिया कोटि हह स्वाक्षि हह कन चि हिले घरा दिया
कोटि हह ७६ नग हान निवा सानि नग कार नर क्ष
काः नवधु नैव वे घो वा मुशीला च कुल स्थिय य

राव

५५२॥

रको पाखाललेर साहु देन बंधग रिमीच कोटि साहु दे
नरवाक्षिको पाने आ फु सीर ले साहु दे बरिले पसा
हुदेन ७७ नदिपात यते कुल नारि पात यते कुल य
नारिणा च नदिना च स्वद दल ली तो गति नदि ले
तिर काण च सा ल्द स्वाक्षि ले कुल कन रव सा ल्द
नदि कोटि रवाक्षि आ फु स स भया को गति ह
७८ लोता पस गति नदि सा न्द सा न्द सा न्द सा न्द

वानकः

॥५३॥

प पार्श्वस्य पृष्ठं यो विदेह्यति न तस्य सुपः लहरा
ले आ प्रा न जी का का ह स मा उ ड न न जिक व द न्या
वा का ह रु क न रा जा ल स मा उ ड न न जिक का प
रु व क न स्वा स्ति स मा उ ड न नै व प स्य नि
जा न्य धः का मा धो नै व प स्य नि न प स्य नि म दा न्य मे
हृ र्थी दो ष न प स्य नि ज न्यै दे वि त न्ये श ले के हि दे
व दे न धि रा ल प नि के हि दे व दे न अ ह का रि ले

स
॥५॥

प नि के हि दे व दे न ध र मा त्रि क मा ठ म न्या ले प नि के हि दे व दे न
८० जी रा म उ प्र स न्ति भा ग्या चि त्त यो व न्ता म् र ए प्र त्पा ग तं
भू रं श स्य च ग द्मा ग न्ति म् प च्चा को अ न्न क न्ति को भ न्नु यो
व न्ता ग पा प दि स्वा स्ति नि को भ न्नु स ग्रा प दे वि त्रि नि फ क्त्वा
का म न्न व क न्न सु रो भ न्नु वे त्ता लि टा पू क्त्वा प दि आ फू म
६ ७ ल क्ष्मि ल क्ष्म णो रो च कु ल हि ने स म्ब न्ति अ
पा त्रे म ते ना रि गि रौ व य ति वा स व यो सं सा र मा हा चार

चानकः

॥५४॥

थोककुएवदोआभयेदिकुन्यन्याग्रगलक्षणनहुन्यादे
उलक्षिमरहंहीनकुलनहुन्यादेउसास्वानिरहंछिन्य
नियाप्रुखदेउस्वाहिउदेयोलिनैपर्वतमहावद्याभापा
कोजैकापलागदैत ८२ यस्यभाष्याविरूपाचकश्य
लिकमहप्रिया उतरीतवादीचसानगणजराजरा ज
स्कोधामास्वास्तिनरासीरुहसर्वैशुभारैमुखगन्याकि
वीतन्यावितीकैचताकैजवापदिगगगन्यादित्योप्रु

रामः

॥५४॥

यवधोनभयापनिवादैवधोहुंहु ८३ यस्यभाष्याविरू
पाचपतारिपनुगामीरितित्समकुभाविबसारमान्यमा
रमा जकिस्वास्तिसुंदरिभन्याकोमान्यापीधारेवचनवो
लन्यादुतस्कोलक्ष्मीदेहिस्वासीहोशुभैकुथकोलक्ष्मी
चाहिदैत ८४ यस्यभाष्यागहेनित्यभुनिवपारिगजति
तस्यसीदतिगाचाणिपदोनीवहिमागमे जकिस्वास्तिघा
माहसर्वैकुकुलेभुक्ताकैहपकाउदेत्योप्रुखकोशारहि

उत्तरेमाकमलमक्याकोजसोशुकिजाहू ८५ यस्य
 भाष्यगिदेनित्यमानेवहितकारिणि बहूनेतस्यगात्रानि
 शुकपक्षेयथासति जस्योद्यमास्वास्तिलेहितजग्या
 वानकः ॥ ८६ ॥ किजातेबहुमिपुत्रैः शोकसत्तापकार
 केः वापकः कुलालवीयत्रविश्रमतेकुलम् बाबालाइशोक
 सत्तापदिन्याधौ ॥ ८७ ॥ कुलथाभिशसन्त्याकु

रामः

॥५५॥

कर्मनिगन्तरिकदोरालेपतिपुगाहू ८७ एकाभाष्यत्रयः
 पुत्रादेहलेदसदेनवेः कन्याकालावसानेचनतेयास्यतिवि
 किपाम् जस्योद्यमायकस्वास्तिलेहितजग्या
 बोभयापदिहककन्याजन्माइदनादिनुपाइयोप्रन्या
 तितिहूकोइहलो कमापलोकमापनिवेगाइदेन
 ८८ एवव्यावहयः पुत्रागयामेकोपदिपुजेत् यजेतवा
 श्वमेधेयानीलवावयमुत्तजेत् मनुष्यलेधेरेदोरकनइ

वानकः

॥५६॥

हागनुपदिष्टकलेगया आदुगलरिकले सुखमेवपन्नगला
एकलेवृषोत्तगश्चाधगला ८८ ईकेरा सुखवधेशा
दलमानेरा वन्दिना दलतेतदनसर्वकुपुत्रमा कुलंगया
वनमासुका कोटकरुखदछो भन्यापदि न्यस्कोसगेह
जारादुरियो सुखपनिदाहंछ नलेकुलमारिककुपुत्र
हुन्या विजिक्के सवेकुलकननासगह ८९ ईके
नापिसुखक्षणापदिनेनसुगदिना वासिततदन

रामः

॥५६॥

सर्वसुपुत्राकुलंगया वनमासुगंधगारिफुल्पाकारकरु
खलोपानेसवेवनसुगंधगारिदह नलेकुलमारिककुपुत्र
लेसवेकुलकनउद्धारगह ८९ यस्यपुत्रावसाभन्यामा
यदिदनुगामिनी विभजेवपिसुखसुखस्वर्गोसहि
नले जसुखोरावाकास्वास्ति सर्वेआफ्रावस्यमाह ९०
नलेपनिसुखभयाकोविनजसोह नकोयहापुत्रि
माहास्यगनिनु ९१ तेपुत्रायपितुर्वस्याः सवितायसु

वाचक

॥५७॥

येष्वक नमिचंयत्रविश्वाससाभाषापिचनिर्वर्ति जे
वावाकावचनमाधारिभैरहं हूतम्लादपुत्रमनुजस्तेहो
राकनपियागमानिपालनागर्धनस्कनवावाभनुजस्काहे
इविस्वासकुरोगरिह तस्कनमिचमनुजस्काहागइकर
सर्वेष्वोक्तेलानुनदपोइहनेस्कनस्वास्तिभनु ६३
यस्मिन्जीवतिजीवनीविद्यामिचाश्रवाधवा सफलजि
वित्तंनस्यश्रान्तमर्थकोनजिवति जुनप्रह्वपूनालोग

शम

॥५७॥

रिद्रास्तमिमिवंचुद्धसुवैलेखानुपाइज्जुदह तस्कोजी
याकोसफलदभनु आफ्रापेटमात्रपोसनालाइतासुगुरुप
निज्जुदह ६४ सजिवतिगुणाद्यस्ययस्यधर्मस्तजिवति
गुणाधर्मविहि नस्यसि सफलं तस्य जीवितम् योसमस्तमाहा
जस्कोसंगगुणाधर्मद तस्कोजियाकोसफलद गुणारधर्म
हेनभस्यातस्कोजियाकोवेष्यहे ६५ वाचासातीयस्यर्षा
यारूपवतिस्ति लक्ष्मीत्यागवति यस्य सफलीतस्य जीवितम्

वानरः

॥५८॥

जस्माद्वदन्त्यामासास्वतिष्ठत्पदानि स्वादिपानि दूदानगार्ति
दिन्याधरापानिष्ठमन्यापदि तसको जीयाको सफलम
नु ॥५८॥ धर्मार्थकाममोक्षायापत्येको वीतिविद्यं
अजागरुः स भूताणां निरर्थतस्म जीवीतम् धर्ममर्थ
काममोक्षयो चार्यो कमायुः कपनि जस्को ह्येन सौह
वैरुन्त्याको भनु तसको जीयाको व्यर्थिष्ठ ॥५९॥ धर्मसत्य
दिहि राग्यदिन्या निविविची याम लोहकावस्त्रहि

शामः

॥५८॥

स्वयमेव प्रतिपत्ति सत्य धर्मनिहत्या मुनुष्यको आग्रदवि
वैद्युद्विष्टा हासले लगाया को लगा आगे का शपला मे
लले गारि बादे फाती जाहू तसे जानु ॥६०॥ शत्रोरपि गरा
वाचा दोषा वाचा गरी अपि युक्ति युक्तवचो ग्राह्यं न वाच्यं
रुगौ म्वात् सत्रुला इपनि योग्य भया को गरा को कुरागु निपिष्ठ
गुरुला इपनि अयोग्य भया को दोष कुरागु निपिष्ठ शत्रु को नास्त
हेन्या रूगुरु को नास्त नहेरु ॥६१॥ अकाले न कलव प्राणी

चानकः
॥५८॥

कराठगमैशी कर्मवमेवकर्तव्यप्राणैः कराठगमैपि मनुष्य
लेकं कराठमापानपुण्यापनिनगारिन्पाकाकासगर्न कराठमा
प्राणापुण्यापनिगारिन्पाकासकुरैगर्गैपिद्व १०० ५ रामः
ति श्रीचानके सासग्रहे द्वितीयसतकम् २ कालेचरिण
सासाधिः कालेचमिचवीग्रहः कायकारणमात्रिन्यकाल
क्षयतिपरिदत्तः कालमासनुसवापनिमिलनपद्व काल
मामित्रसंगपनिशृणुगन्तुपद्व कायकारणकोवीचारगारि

॥५८॥

परिदत्तलेकालसपरागारिमिलनपद्व १ कालः पवति
भूतानिकालसंदर्भेप्रजाः कालः सुप्रेषजगतीका लोहिदु
रतिकमः काललेभूतप्रातिकनपपमद्व कालेलेसर्वेको
नासपनिमद्व प्राणिहस्तप्यापनि कालजागदेद्वद्वः सर्व
भवावालेद्वलोदः २ कालात्रेद्वनेविजफलकासा
त्पवति कालात्पवनेसाद्वः पुनः कालादिमंदरेकाले
लेविजरापिद्व कालेलेफलदद्व कालेलेसुखदद्व का

ASIAN ARCHIVES

2297

1854